भाई

लोगों और गाडियों का शोर और आवाज से भरा हुआ मुंबई शहर में एक छोटी सी परिवार बडी सुकून से रहती थी। पापा, माँ और दो बच्चों एक लडका और लडकी थे वो दो बच्चे। लडका का नाम राज और लडकी "प्रिया"। माँ-बाप के साथ सकुशल और खुश रहते थे वे दोनों। उनके घर में हर जगह खुशियाँ छिपती थी। हर मुश्किलों को हँसी से जीतने वाला था राज का पापा। इसीलिए सब साथ बडी खुशी से ही अपनी जिंदगी बिता रही थी। उमर में प्रिया से भी आठ साल बडे थे राज। प्रिया अपने भाई को बडी मीठी आवाज से "राज भैया"... बुलाती थी। दोनों अपने पढाई भी बहुत अच्छे से कर रहा था और माँ बाप तो उनका प्रोत्साहन भी बहुत अच्छे से करते थे।

एक दिन राज को पापा ने एक "मोबाईल" फोन खरीदकर एक तोफे जैसे दिया राज बहुत खुश हुआ क्यूँकि इस बीच

के लिए बहुत साल इंतज़ार किया था वो। वह मिलते ही राज अपने दोस्तों से कहा कि "मुझे नई फोन मिल गया है"। वक्त गुज़रा दिनों... हफ्ते... महीनों हुआ। राज उस फोन से आँखें न बदला बस उस फोन पे ही रह गया। राज का सारा वक्त खाने का वक्त तक वह उसमें कुछ देखता रहता था। घरवालों से बात करना भी कम कर दिया राज ने क्योंकि उनको वक्त नहीं मिल रहा था सारे समय तो वह ~~काम~~ मोबाईल ही मोबाईल था। घर में सब राज का ये बदलाव देखा पहले जैसे बात करते नहीं है, प्रिया से भी कुछ भी बोलते नहीं है" इसे बहुत बदलाव आने लगा राज को। उनको बहुत बुरा दोस्तों थे। राज के दृष्टी में वह अच्छे-अच्छे दोस्तों था लेकिन वह राज को धीरे-धीरे बदलने लगा। एक अच्छे दिल के मालिक था राज न शराब पीता था, न सिगरट पीता था लेकिन अब तो ~~वो~~ राज ये सब करने लगा और अपने मोबाईल में बुराई भी देखने

लगा। वैसे चीजों देखते-देखते राज का दिल और दिमाग बुराई से भर गया। प्रिया को अपने भाई जान जैसी थी। बहुत प्यार करती थी वो राज को। राज का ये हाल देखकर प्रिया की दिल तो बहुत भारी पड़ा लेकिन वो अपने भाई को कभी नफरत नहीं किया।

प्रिया तो पढ़ाई में तेज थी। एक डॉक्टर बनना प्रिया कि इच्छा थी। इस इच्छा को सच बनाने के लिए बहुत महनत किया प्रियाने। एक परीक्षा के लिए हाईद्राबाद गई प्रिया ने उस दिन वो अकेली ही गई थी क्यूँकि राज ने साथ जाने को मना कर दिया। बहुत बार पूछा प्रिया ने लेकिन राज का नशीली दिमाग में अब घरवालों के लिए कुछ प्यार नहीं बचा था बस उनको नशीली चीजों से ही प्यार था। लेकिन प्रियाभाई मना करने के बाद भी अपने सपने सच बनाने का तो मेहनत नहीं छोड़ा वह अकेला गई हाईद्राबाद। परीक्षा तो खतम

करने के बाद वह घर लौट रही थी। बहुत दूर थे हाईदराबाद और मुंबई के बीच जब वो मुंबई पहुँचा तब रात हो गई थी। रास्ते में कोई भी नही थे। अंधेरा ही अंधेरा था हर जगह। कुछ देर के बाद प्रिया एक जगह पे बहुत लोगों को देखा। नौ-दस लोग होंगे वो सब शराब के नशे में थी। प्रिया ने डर को अंदर ही पकड़कर आगे चला। लेकिन वो लोग तो एक लड़की को देखते ही उसकी पीछे जाने को तैयार करने लगा एक ने प्रिया की पीछे गया। प्रिया ने जल्दी चलना शुरू किया तब ये भी जल्दी पीछा करने लगा। रात की अंधेरे में रास्ते तो ठीक से दिखाई नही दे रहा था फिर भी अपनी जान की पर्वा प्रिया को शक्ती दिया। वह जल्दी बढाते बढाते आखिर भागने शुरू किया लेकिन वो पीछे करने वाला इंसान तो उतना जल्दी जाने वाला भी नही था वह बहुत जोर से और जल्दी से

भागकर प्रिया की बालों में पकड़कर ~~रोक~~ उसको रोक दिया। प्रिया तो दर्द से बोल ~~छुड़~~ छोड़ने को और लोगों से बचाने को भी बहुत चिल्लाया लेकिन उस रात में कौन सुनेगा ये सब। उस आदमी ने प्रिया को भागने के लिए बहुत मारा और उसकी दुपट्टा में वो फेंक दिया। प्रिया के साथ बुरा करने जा रहा था वो। प्रिया निसहाय होकर बहुत रोकर छोड़ने को बोला। अंधेरे में उस आदमी का चेहरा तो साफ नहीं दिख रहा था। लेकिन प्रिया ने उनसे अपेक्षा की कि "मुझे कुछ मत करो, छोड़ो।" कौन सुनता है ये सब वह आदमी तो इनसान नहीं जानवर का तरीके से प्रिया को मारता था। वह उसकी कपड़े भी फटा दिया। ~~सिसकी~~ ~~से~~ ~~प्रिया~~ अपनी जीवन के लिए बहुत जोर से मदद मांगी वो... कोई सुना नहीं आखिर एक लड़का ~~उस~~ उस रास्ते से गुजर रहा था वह प्रिया की आवाज

सुना और वह उस आदमी ने प्रिया को इस हालत में बनाते देखा फिर कुछ भी सोचने के बिना वह लड़का उस आदमी को जाकर मारने लगा। बहुत मारा जोर से मारा। इस लड़के को भी एक बहन थी। इसीलिए जब वो प्रिया को इस हालत में देखा तब बिना कुछ मदद करने वाले का मन नहीं हुआ। "नसीब" नाम था उसका। नसीब ने वह आदमी को मारने के बाद अपने गाड़ी से सर्दी में पहनने वाला कपड़े निकाल कर प्रिया को दिया और पानी पिलाकर उसे सहलाया और बोला कि "छोटी... तू तो मेरी बहन की ही उमर है इसलिए एक भाई की तरह समझना मुझे और तेरी भाई ही कह रहा हूँ, जो तुम्हें इस हालत बनाया उसे मत छोड़ना। चल.. उठ.. मार उसे"। इस शब्दों ने प्रिया को नई ताकत दिया। प्रिया ने उस आदमी के पास जाकर उसको मारने को

हाथ बढ़ाया लेकिन प्रिया कि आँखों से आँसू निकलने लगी उसकी हाथ काँपने लगी। वह अपने चेहरे को हाथों से बंद करके रोने लगा नसीब को कुछ भी नही समझा। वह जल्दी प्रिया की पास जाकर वजह पूछा लेकिन वो तो नसीब को और दया और दुख से एक बार देखा और उनका हाथ पकड़कर फिर भी जोर से रोने लगा। जो प्रिया को पीछे करके उसकी साथ जबरदस्ती करने की कोशिश कि वह राज था। प्रिया की खुद का भाई। ने ये बात जानकर नसीब तो दिल तो तोड़ने लगा क्योंकि एक भाई को कैसे अपना बहन से ऐसे हरकतें कर सकता है। नशे से दिल, दिमाग और दिमाग का दूरी और अच्छाई नष्ट हुआ था राज का। जो भाई मुसीबत में हाथ थामकर एक बहन की रक्षा करना था वो भाई आज बहन को मारने का कोशिश किया और एक अजनबी ने प्रिया को

मौत का मुह से बाहर निकाला। एक अजनबी ने किया भाई का कर्म और भाई काल का कर्म भी। नसीब का प्यार और मन देखकर सच में प्रिया को नसीब का बहन बनने का इच्छा क्योंकि उतना खयाल करता था नसीब ने प्रिया कि जो खुद का भाई नहीं कर पाया। नसीब को और शाम को देखकर प्रिया को शक सा लगा कि "इनमें से कौन है मेरा भाई?"

"साथ पैदा होने वाला या मुसीबत में साथ खड़ा होने वाला?"